B.Com.III Pass (Pass Course) VIth Sem w.e.f. from 202[illegible]
Paper: Cost Accounting -II
Code: 6.02

Time: 3 Hours **Theory Marks: 80**
Internal Marks: 20

Note:- The Examiner shall set nine questions in all covering the whole syllabus. Question No.1 will be compulsory covering all the units and shall carry 8 small questions of 2 marks each. The rest of the eight questions will be set from all the four units. The examiner will set two questions from each unit out of which the candidate shall attempt four questions selecting one question from each unit. All the questions shall carry 16 marks each.

Unit – I

__Unit and output costing__ : Meaning and objectives. Cost sheet – Meaning, Performa, Types, Preparation of Cost sheet. Determination of tender price. Production account – main types. Job and Batch Costing.

Unit – II

__Reconciliation of cost and Financial accounts__ : Meaning, objectives, procedure. Contract Costing - Meaning; Main features; preparation of contract account, Escalation clause; Contract near completion; Cost plus contract.

Unit- III

__Process Costing__ : Meaning; Uses; Preparation of process account, Treatment of Normal Wastage, Abnormal Wastage, Abnormal Effectiveness; Treatment of opening and closing stock (Excluding Work in Progress): Joint - Product and By - Product: Main methods of apportionment of Joint cost. Inter process profits.

Unit – IV

__Operating Costing__ : Transport Costing, Hotel Costing, Cinema Costing and Power House Costing.

__Cost Control Account__ : Non-Integrated and Integrated

Suggested Readings:-

1. S.P. Iyengar – Cost Accounting, Sultan Chand & Sons, Educational Publishers, New Delhi.
2. Jain & Narang – Cost Accounting – Principles and Practice Kalyani Publishers, Ludhiana.
3. Maheshwari and Mittal – Cost Accounting – Sh. Mahavir Book Depot, Delhi.

question

Unit – I

__Process Costing__ : Meaning; Uses; Preparation of process account, Treatment of Normal Wastage, Abnormal Wastage, Abnormal Effectiveness; Treatment of opening and closing stock (Excluding Work in Progress): Joint - Product and By - Product: Main methods of apportionment of Joint cost. Inter process profits.

Unit – II

__Contract Costing –__ meaning, main features, preparation of contract account, Escalation clause; contract near completion; cost plus contract. Job and batch costing.

Unit- III

__Budgetary control –__ meaning of budget and budgetary control, budgetary control as a management tool, limitations of budgetary control, forecasts and budgets, installation of budgetary control system, classification of budgets, fixed and flexible budgeting, performance budgeting, zero based budgeting and responsibility accounting.

Standard Costing : meaning, limitations, standard costs and budgeted costs, determination of standard cost, cost variances, direct material and direct labour only.

Unit – IV

__Marginal Costing and Profit planning:__ Marginal costing, Absorption costing, Marginal cost, Cost volume Profit analysis, BEP Analysis, Key factor, BE chart, angle of incidence, concept of decision-making and steps involved, determination of sales mix, make or buy Decisions.

Date

Unit or Output Costing:

इकाई अथवा उत्पादन लागत विधि लागत लेखांकन की वह वस्तु की प्रति इकाई पद्धति है जिसके द्वारा किसी भी वस्तु की प्रति इकाई लागत अथवा कुल उत्पादन लागत ज्ञात की जा सकती है। इस विधि में प्रति इकाई लागत ज्ञात करने के लिए किसी अवधि की कुल लागत को उस अवधि में उत्पादित इकाइयों की संख्या से विभाजित कर देते हैं। यह विधि उन उद्योगों में प्रयोग की जाती है जहाँ (1) उत्पादन निरन्तर चलता रहता है (2) उत्पादन की इकाइयाँ रंग रूप व आकार में एक समान की होती हैं, जैसे कोयले की खान, कपड़े की मिलें, ईंटों के भट्टे

इकाई लागत ज्ञात करने की विधि

1) लागत पत्र बनाकर
2) लागत विवरण बनाकर
3) उत्पादन खाता तैयार करके।

लागत पत्र के प्रकार

1) साधारण लागत पत्र
2) तुलनात्मक लागत पत्र
3) लाभ के विवरण सहित लागत पत्र

Cost Sheet
for the month ending on

Particular	Total Cost	Cost Per Unit
Direct Material	–	–
Direct labour	–	
Direct Exp.	–	
Prime Cost	–	
Add:- factory overhead	–	
Add:- Opening WIP	–	
Less:- Closing WIP	–	
Work Cost	–	
Add:- Office overhead	–	
Cost of Production	–	
Add:- Opening ~~WIP~~ finished good	–	
Less:- Closing finished good	–	
Add:- Selling & Distribution Overhead	–	
Cost of Sales	–	
Add:- Profit or loss	–	
Sales	–	

लागत पत्र व लागत विवरण समान प्रारूप में बनाए जाने वाले पत्र हैं अन्तर केवल इतना है कि लागत विवरण में उत्पादन की कुल लागत को ही दिखाया जाता है, प्रति इकाई लागत नहीं दिखाई जाती जबकि लागत पत्र में उत्पादन की कुल लागत व प्रति इकाई लागत दोनों दिखाए जाते हैं।

Production Account :- उत्पादन खाता दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर तैयार किया जाता है। उत्पादन खाते का उद्देश्य भी इकाई लागत ज्ञात करना होता है। इस खाते को निर्माण खाता भी कहते हैं। परन्तु इसके साथ-2 अनेक वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है तो प्रत्येक वस्तु का उत्पादन खाता अलग से तैयार किया जाता है ताकि यह ज्ञात हो सके कि एक उत्पादन का कार्य लाभप्रद ढंग से चल रहा है या नहीं। यदि कोई उत्पादन कार्य हानि दिखाता है तो इसके व्ययों में मितव्ययता लाने की चेष्टा की जाती है अन्यथा उसे बन्द करना ही उचित समझा जाता है।

Tender Price :- प्राय: उत्पादकों से पूछा जाता है कि वे किस मूल्य पर ग्राहकों को माल सप्लाई कर सकते हैं तो वे जो मूल्य बताते

है उसे निविदा मूल्य कहते है जो उत्पादक अथवा विक्रेता सबसे कम मूल्य पर आपूर्ति करने के लिए तैयार होता है इस उत्पादक अथवा विक्रेता से माल क्रय कर लिया जाता है निविदा मूल्य ज्ञात करते करते समय सामग्री के मूल्य, मजदूरी की दरों तथा अन्य लागतों के सम्भावित परिवर्तनों का ज्ञान होना आवश्यक है निविदा की लागत निकालकर उसमें एक निश्चित % लाभ सम्मिलित किया जाता है

Job and Batch Costing

उपकार्य तथा समूह लागत :-

उपकार्य मुख्यरूप से फैक्टरी के अन्दर ही आमतौर पर थोड़े समय में ही पूरे कर लिए जाते है ये उपकार्य ग्राहक के निर्देश और आवश्यकतानुसार पूर्ण किए जाते है उपकार्य ग्राहक के निवास एवं कार्यस्थल पर जाकर भी पूरे किए जाते है, जैसे फर्नीचर का काम, पर्दे बनाना।

विशेषताएँ :→

1) वस्तुओं का उत्पादन ग्राहक से आदेश प्राप्त होने के बाद ही किया जाता है

2) प्रत्येक उपकार्य को अपनी विशेषताओं के अनुरूप ही पूरा किया जाता है

3) प्रत्येक उपकार्य की लागत उपकार्य के स्वभाव के अनुसार अलग-२ होती है

4) लाभ तथा हानि भी प्रत्येक उपकार्य के अनुसार अलग - अलग होती है

5) प्रत्येक उपकार्य को अलग क्रमांक निर्धारित किया जाता है

6) प्रत्येक उपकार्य की लागत का पता उस उपकार्य के पूरा होने के बाद ही लग पाता है

उपकार्य आदेश लागत लेखांकन की कार्यविधी :→ उपकार्य लागत प्राप्त करने के लिए निम्न कार्यविधी अपनाई जाती है।

ग्राहक द्वारा जाँच

↓

उपकार्य के मूल्य का अनुमान

↓

आदेश प्राप्त करना

↓

उपकार्य का क्रमांक

↓

उत्पादन आदेश

↓

लागत का लेखा जोखा

↓

उपकार्य पर लाभ अथवा हानि

उत्पादन आदेश का नमूना

क्रमांक ______

ग्राहकों का नाम ______

आदेश संख्या नं० ______ शुरू करने की तिथि ______

तारीख ______ समाप्त करने की तिथि ______

मशीन नं० ______ उत्पादन की मात्रा ______

आदेश का ब्यौरा ______ क्रिया संख्या ______

समय	काम का ब्यौरा	विभाग संख्या	किए गए काम का विवरण	कुल उत्पादन	कुल खर्चा

Batch Costing समूह लागत:-

जब वस्तुओं का उत्पादन एक ग्रुप में या समूह में अथवा जब एक जैसे कलर, डिजाइन अथवा गुणवत्ता का उत्पादन ज्यादा मात्रा में किया जाता है और मशीन की Setting एक ही प्रकार के उत्पादन के लिए एक ही बार करनी पड़ती है तो उसे समूह उत्पादन कहते हैं इससे अभिप्राय है जब अलग-2 ग्राहकों से एक ही प्रकार की वस्तुओं का ऑर्डर प्राप्त होता है तथा इन सभी आर्डरों को एक ही समूह में उत्पादित किया जाता है दूसरे ग्रुप में उत्पादन के लिए मशीन की Setting दुबारा करने की आवश्यकता होती है जैसे अलग-2 विषयों की पुस्तकों की छपाई के लिए मशीनों की Setting अलग-2 की जाती है लागत दूर समूह की होती है एक इकाई की उत्पादन लागत निकालने के लिए समूह की कुल लागत को समूह में उत्पादित कुल इकाइयों की संख्या से भाग दिया जाता है

प्रत्येक समूह के उत्पादन के लिए अलग-2 लागत पत्रक तैयार किया जाता है

$$\text{प्रति इकाई लागत} = \frac{\text{समूह की कुल लागत}}{\text{समूह में कुल इकाइयों की संख्या}}$$

I.C.M.A, "समूह लागत लेखांकन से अभिप्राय उस विशेष पद्धति से है जिसमें एक ही प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन एक बार में (एक ही ग्रुप या समूह में) होता है यह उत्पादन विक्रय के लिए भी हो सकता है अथवा स्टोर के लिए भी।"

समूह लागत लेखांकन के लिए दो प्रमुख बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

1) सेट अप लागत (Set up Cost)
2) समूह साइज (Batch Size of Articles)

सेट अप लागत :- जब भी नए या दूसरे अथवा तीसरे ग्रुप या समूह का उत्पादन किया जाता है तो हर बार मशीनों को नये तरीके से अथवा ढंग से लगाया जाता है। मशीनों की नई setting में समय तथा लागत दोनों का लगना स्वाभाविक है इसे Setup Cost कहते हैं Setup Cost को Direct Cost गिना जाता है

समूह साइज :- एक बार में कम से कम कितनी इकाइयाँ उत्पादित की जाएँ ताकि उत्पादन लागत कम से कम रहे समूह साइज कहलाता है इस समूह साइज को

Economic Batch Quantity या आर्थिक ढेरी आकार भी कहते हैं इसको निर्धारित करने के लिए दो प्रकार की लागतों पर विशेष ध्यान दिया जाता है

1) मशीन सेटअप लागत :- स्थिर लागतें होती हैं जैसे कर्मचारियों का वेतन, बीमा, निगरानी व्यय, रोशनी आदि

2) परिवर्तनीय लागत :- (Carrying Cost), वे खर्चे होते हैं जो उत्पादन के घटने या बढ़ने से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। पूंजी का ब्याज, माल की ढुलाई का खर्च।

न्यूनतम उत्पादन लागत के लिए Setting up Cost तथा Carrying Cost का बराबर होना जिस स्तर पर सम्भव होता है वही उत्पादन स्तर EBQ कहलाता है

$$EBQ = \sqrt{\frac{2AS}{C}}$$

Where
A = Annual demand in units
S = Setting up cost per batch
C = Carrying Cost or holding cost per unit per year

Unit II

Reconciliation of Cost and financial A/c

जो संस्थाएँ केवल एक ही पद्धति से (वित्तीय पद्धति) से लेखे रखती हैं, उनको लेखों के मिलान की आवश्यकता नहीं है परन्तु संस्थाएँ लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन दोनों प्रकार की लेखा विधि से लेखे रखती हैं उनके लिए लेखों की शुद्धता की जाँच और लेखों में भरोसा रखने के लिए लागत लेखों को वित्तीय लेखों से मिलान किया जाता है, दोनों लेखे दोहरी लेखा प्रणाली तथा समान लेन देन और एक ही प्रकार के बिलों एवं रसीदों से तैयार किए जाते हैं फिर भी दोनों लेखों के नतीजे अलग-2 हो सकते हैं, इसलिए दोनों लेखों का आपसी मिलान करना आवश्यक है।

लागत लेखों तथा वित्तीय लेखों में अन्तर के कई कारण हैं

(1) कुछ मदें केवल वित्तीय लेखों में सम्मिलित की जाती हैं, जैसे

(a) व्यय की मदें – कुछ व्यय एवं हानियाँ वित्तीय प्रकृति की होती हैं जिन्हें केवल वित्तीय लेखों में शामिल किया जाता है, लागत लेखों में नहीं

1) स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर हानि
2) अंशों व ऋणपत्रों पर निर्गमन पर छूट
3) अभिगोपन कमीशन
4) देय छात्रवृत्ति (5) अर्थदण्ड एवं जुर्माना।

(b) नियोजन की मदें – कम्पनी अपने शुद्ध लाभ का प्रयोग जिन मदों के लिए करती है उन्हें लाभ नियोजन की मदें कहते हैं, जैसे

a) लाभांश
b) विभिन्न कोषों में हस्तांतरण
c) लाभ एवं आयों पर कर
d) पुण्यार्थ दान (e) सिंकिंग फंड के लिए आयोजन

(c) आय की मदें – जैसे

1) स्थायी सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त लाभ
2) लाभांश प्राप्त किया।
3) प्राप्त ब्याज
4) प्राप्त हस्तांतरण शुल्क

(2) केवल लागत लेखों में शामिल होने वाली मदें :- आरोपित मदें केवल लागत लेखों में दिखाई जाती हैं वित्तीय लेखों में नहीं। जैसे

1) नियोक्ता की स्वयं की पूँजी पर ब्याज।
2) स्वयं के भवन का किराया।
3) नियोक्ता का स्वयं का पारिश्रमिक व वेतन।

(3) वित्तीय लेखों तथा लागत लेखों में विभिन्न विधियों द्वारा स्कन्ध का मूल्यांकन ->. वित्तीय लेखों में स्कन्ध का मूल्यांकन बाजार मूल्य या लागत मूल्य में जो कम होता इस पर किया जाता है जबकि लागत लेखों में स्कन्ध का मूल्यांकन कई विधियों से किया जाता

है जैसे - LIFO, FIFO, HIFO आदि।

4) ह्रास मूल्यांकन की अलग-2 विधियों का प्रयोग :-

वित्तीय लेखांकन में ह्रास की सरल ह्रास विधि या क्रमगत ह्रास विधि का प्रयोग किया जाता है जबकि लागत लेखांकन में मशीनरी घंटा दर विधि का प्रयोग किया जाता है।

5) उपरिव्ययों में अन्तर :- उपरिव्यय वित्तीय लेखों में तो वास्तविक राशि से लिखे जाते हैं जबकि लागत लेखों में इन उपरिव्ययों को एक अनुमानित ढंग से एक निश्चित % के आधार पर चार्ज किया जाता है।

समाधान की विधियां

1) समाधान विवरण पत्र तैयार करके।
2) स्मृति समाधान खाता तैयार करके।

Reconciliation Statement
as on

Particulars	₹	₹
Profit as per Cost A/c		
Add:- 1) Exp. shown in Cost A/c but not in fin A/c	–	–
2) Exp. overcharged in Cost A/c	–	
3) Overvaluation of O/s in Cost A/c	–	
4) Income shown in fin. A/c but not in Cost A/c	–	
5) Undervaluation of C/s in Cost A/c	–	
6) Depreciation overcharged in Cost A/c	–	
Less:- 1) Exp. shown in fin. A/c but not in Cost A/c	–	
2) Exp. undercharged in Cost A/c	–	
3) Undervaluation of O/s in Cost A/c	–	
4) Overvaluation of C/s in Cost A/c	–	
5) Income record in Cost A/c but not in fin. A/c	–	
6) Depreciation undercharged in Cost A/c	–	
Profit as per financial A/c		

यदि वित्तीय लेखों के लाभ से शुरू करें तो निम्नलिखित प्रक्रिया को उल्टा कर देंगे। जो मदें जोड़ी गई हैं उन्हें घटा देंगे, जो मदें घटाई गई हैं उन्हें जोड़ देंगे।

स्मृति समाधान खाता तैयार करने की विधि :

जब समाधान विवरण पत्र में दिखाई गई सूचनाओं को एक खाते के रूप में लिखा जाता है तो उसे "स्मृति समाधान खाता" कहते हैं लागत लेखों द्वारा दिखाया गया लाभ क्रेडिट में और हानि डेबिट में लिखी जाती है वे सभी मदें जो समाधान के लिए लागत पुस्तकों में जोड़ी जाती हैं, खाते के क्रेडिट में और घटाई जाने वाली मदें डेबिट पक्ष में दिखाई जाती है खाते का शेष वित्तीय पुस्तकों द्वारा दिखाया गया लाभ अथवा हानि होता है

Contract Costing

ठेका लागत विधि एक विशेष प्रकार की लागत विधि है जिसके अन्तर्गत ग्राहक की विशेष बातों के अनुसार काम किया जाता है काम लम्बी अवधि में पूरे होते है और आमतौर पर काम कार्य स्थल पर पूरे किए जाते हैं ठेके के कार्यों को पूरा करने के लिए काफी पैसा खर्च होता है ठेके के काम को ठेकेदार और ठेकेदाता आपस में तय शर्तों या समझौते के अनुसार पूरा करते हैं भवन निर्माण, सड़के, पुल रेलवे लाइन आदि कार्यों को ठेके पर पूरे कराए जाते हैं

ठेके से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें :-

1) उप ठेका :- बड़े-बड़े ठेका कार्यों में जब कुछ कार्य विशेषज्ञों से कराए जाते हैं जैसे भवनों में बिजली का काम, शीशे का काम तो इनको करने के लिए ठेकेदार अलग-2 कामों को करवाने के लिए अलग-2 ठेकेदार रख लेते हैं ऐसे ठेकेदारों को उप ठेकेदार कहते हैं

2) Esclation Clause (वृद्धिगत मूल्य) - कई बार ठेका लेते समय और पूरा करते समय कीमत में अन्तर हो जाता है यदि कीमत वृद्धि होती है तो इससे बचने के लिए जो Clause होता है उसे Esclation Clause कहते हैं

प्रमाणित कार्य (Work Certified) :->

जब कोई ठेका लम्बे समय तक चलता है तो Contractor समय-2 कुछ Cash लेता है लेकिन नकद भुगतान किस प्रकार किया जाए इसके लिए कितना कार्य पूरा हुआ है ये जानने के लिए Contractor एक निरीक्षक की नियुक्ति करता है जो इस बात को प्रमाणित करता है कि कितना भाग पूरा हो चुका है लेकिन कोई कार्य 50% पूरा हो जाता है परन्तु निरीक्षक द्वारा 35% कार्य को प्रमाणित किया जाता है तो 15% कार्य अप्रमाणित कार्य कहलाता है। प्रमाणित कार्य की सारी राशि नकद भुगतान नहीं की जाती जो कार्य प्रमाणित हो चुका है लेकिन उसका नकद भुगतान नहीं किया है तो वह जमानत राशि Retention money कहलाती है जैसे 50000 का कार्य प्रमाणित हो गया है लेकिन इसमें से 35000 का भुगतान किया जाता है तो 15,000 जमानत राशि कहलाती है।

अप्रमाणित कार्य :- जो काम ठेकेदार ने पूरा कर दिया है परन्तु किसी कमी के कारण सर्वेयर उसे पास नहीं करता अप्रमाणित कार्य कहलाता है। प्रमाणित कार्य तथा अप्रमाणित कार्य दोनों ही चालू कार्य के भाग हैं। इन दोनों को ठेके खाते के क्रेडिट में दिखाया जाता है।

चालू कार्य खाता (Work in Progress A/c) :- चालू कार्य वह कार्य है जो अभी तक पूर्ण नहीं हुए हैं इस खाते में दोनों मदें प्रमाणित कार्य तथा अप्रमाणित कार्य को Dr. में दिखाया जाता है तथा क्रेडिट पक्ष में Profit in Reserve को दिखाया जाता है।

अपूर्ण कार्य पर लाभ की गणना :->

जब काम एक वर्ष से अधिक में पूरा होता है तो सारा सम्भावित लाभ हम उस साल का लाभ नहीं मान सकते क्योंकि काम अभी अधूरा है तथा इस समय में कोई भी घटना हो सकती है जैसे आग लगना, भूकम्प आना, बाढ़ आना, दंगे होना जिससे काम में नुकसान हो जाए या वह पूरा न हो और इन कारणों से ठेकेदार को ज्यादा हानि उठानी पड़ सकती है इस कारण से अधूरे पड़े कार्यों पर लाभ इन सभी सम्भावित घटनाओं को ध्यान में रखते हुए कम से कम लिया जाता है। सम्भावित लाभ का जो भाग लाभ हानि खाते में लिया जाता है वह इस बात पर निर्भर करता है कि पूरे ठेके का अब तक कितना काम पूरा हो गया है तथा कितना अभी बाकी है।

i) Profit should be considered in respect of work certified only, work uncertified should always be valued at cost.

2) The whole of loss, if any, should be transferred to P&L A/c.

iii) If the work certified is less than 1/4 of contract price - No profit should be taken into consideration because in such a case it is not possible to foresee the future clearly. Whole of notional profit is taken to reserve profit.

(iv) If the work certified is 1/4 or more but less than 1/2 of the contract price.

- 1/3 of the notional profit on cash basis should be taken to P&L A/c.
- Remaining 2/3 of the notional profit on cash basis and notional profit not received in cash should be treated as Reserve profit.

Date

Contract A/c No ___

To Materials: from store, Purchase, from other Contract		By Material / Plant Return to store	
To Wages		By Mat/Plant Sent to other contract	
To Direct & indirect exp		By Material Sold	
To Plant Purchased		By P&L A/c — Loss on sale of M/P	
To Outstanding Exp.		By P&L A/c Mat/Plant Lost or Destroyed	
To Cost of Extra work done		By Mat. at site	
To Sub Contract Costs		By Plant at site after Depreciation	
To P&L A/c — Profit on Sale of Plant material		By W.I.P. Certified, Uncertified	
To Notional Profit		By Notional Profit	
To P&L A/c			
To W.I.P. A/c (Res. Profit)			

(Contract near completion), ~~if possible~~

जब ठेका पूरा होने के करीब होता है तो ठेका पूरा होने की अनुमानित लागत ज्ञात करते है, ठेका पर अनुमानित लाभ की गणना ठेका लागत में से अनुमानित लागत घटाकर निकाली जाती है

अनुमानित कुल लाभ = ठेका लागत − अनुमानित कुल लागत

अनुमानित कुल लाभ का एक भाग P&L में हस्तांतरित किया जाता है P&L में कितना हस्तांतरित किया जाए यह निम्न फार्मूले से ज्ञात किया जाता है

1) $\text{Estimated total Profit} \times \frac{WC}{\text{Contract Price}}$

2) $\text{Estimated total Profit} \times \frac{\text{Cash Received}}{\text{Contract Price}}$

3) $\text{Estimated total Profit} \times \frac{\text{Cost of work to date}}{\text{Estimated total Cost}}$

4) $\text{Estimated total Profit} \times \frac{\text{Cost of work to date}}{\text{Estimated total Cost}} \times \frac{\text{Cash Received}}{WC}$

Unit III

Process Costing

जब एक उत्पाद को बेचने योग्य या तैयार माल बनाने के लिए कई प्रकार के चरणों या प्रक्रिया या विभागों या लागत केन्द्रों या मशीनों से गुजरना पड़ता है तब प्रत्येक चरण या प्रक्रिया या विभाग की प्रति इकाई उत्पादन लागत जानने के लिए अपनाई गई पद्धति को प्रक्रिया लागत पद्धति कहा जाता है पहली प्रक्रिया का उत्पादन दूसरी प्रक्रिया के लिए कच्चा माल तथा दूसरी प्रक्रिया का उत्पादन तीसरी प्रक्रिया के लिए कच्चा माल होता है और यह प्रक्रियाओं से होकर गुजरना पड़ता है प्रक्रिया लागत का प्रयोग अनेक उद्योगों में किया जाता है

कागज का कारखाना, तेल शोधक कारखाना खाद्य तेल, डेयरी उत्पाद, कपड़ा उद्योग।

प्रक्रिया लागत पद्धति के तत्व →

1) प्रत्यक्ष सामग्री — सामान्यत: प्रक्रिया लागत में उत्पादन के लिए आवश्यक सारी सामग्री पहली प्रक्रिया में जारी की जाती है इसे प्रक्रिया A/c की डेबिट में दिखाया जाता है

2) प्रत्यक्ष श्रम — जिस प्रक्रिया के लिए कर्मचारियों को लगाया गया है उनको दी गई वेतन या मजदूरी को उसी प्रक्रिया के Process A/c में डेबिट किया जाता है

3) **प्रत्यक्ष व्यय** :- ऐसे सभी खर्चे जो प्रक्रिया विशेष के लिए किए जाते हैं जैसे कार्क, बोतल, बैग या प्राइमरी पैकिंग माल इस प्रकार के प्रत्यक्ष व्यय हैं जो एक प्रक्रिया लागत के लिए होते हैं इसे Process A/c के Dr. Side में दिखाया जाता है।

4) **उपरिव्यय** :- उपरिव्ययों को सभी प्रक्रियाओं में एक उचित आधार पर बाँटा जाना चाहिए। इसे Process A/c के Dr. में दिखाया जाता है।

भार में कमी और अवशेष की बिक्री :-

बहुत से उद्योगों में जब वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है तो प्रयोग की गई सामग्री में उत्पादन प्रक्रिया के दौरान भार में कमी हो जाती है ये कमी वाष्पीकरण तापमान एवं काट छांट के कारण होती है, इसको अवशेष कहा जाता है अवशेष को कई बार बाजार में कुछ कीमत पर बेचा जा सकता है परन्तु कई बार इसकी कोई बाजार कीमत नहीं होती यदि अवशेष को बेचा जाता है तो बाजार मू० को प्रक्रिया खाते के क्रेडिट साइड में दिखाया जाता है क्योंकि इससे प्रक्रिया की उत्पादन लागत कम हो जाती है।

उत्पादन में हानि :-

कच्चे माल को तैयार वस्तु में बदलने के लिए की गई उत्पादन प्रक्रिया के दौरान कुछ हानि होती है यह हानि दो प्रकार की हो सकती है

1) सामान्य हानि।
2) असामान्य हानि।

सामान्य हानि :- ऐसी हानि जो वस्तु की प्रकृति के कारण प्रबन्ध द्वारा पहले से ही सम्भावित है या जिस पर नियंत्रण नहीं हो सकता या जिसे रोका नहीं जा सकता या ऐसी हानि जो उत्पादन प्रक्रिया के दौरान अवश्य होती है इसी को सामान्य हानि कहते हैं, जैसे जूते बनाते समय कुछ चमड़ा खराब हो जाता है, फर्नीचर बनाते समय बची खराब लकड़ी या बुरादा। यह हानि उत्पादन को कम करती है इस हानि को बाजार में बेचा भी जा सकता है परन्तु कभी इसका कोई बिक्री मूल्य नहीं होता यदि इसका कोई बिक्री मूल्य है तो इसे प्रक्रिया खाते को क्रेडिट साइड में दिखाया जाना चाहिए।

असामान्य हानि :- ऐसी हानि जिसको पहले नहीं जाना जा सकता जो प्रक्रिया के दौरान अचानक होती है उसे असामान्य हानि कहा जाता है जब वास्तविक उत्पादन

सम्भावित उत्पादन से कम होता है तब असामान्य हानि होती है ~~इसका~~ यह हानि कई कारणों से हो सकती है जैसे, बिजली का फेल होना, मजदूरों की हड़ताल आदि यह हानि उत्पादन लागत को प्रभावित नहीं करती इसलिए इसे P&L A/C से चार्ज किया जाता है यदि असामान्य हानि को बाजार में बेचने से कुछ प्राप्त होता है तो इसे असामान्य हानि खाते में दिखाया जाता है बाकि हानि की लागत को P&L में हस्तांतरित कर दिया जाता है

Cost of Abnormal loss =

$$= \frac{\text{Normal Cost of Normal Output}}{\text{Normal output}} \times \text{Abnormal loss of the Units}$$

असामान्य लाभ :- जब वास्तविक उत्पादन सम्भावित उत्पादन से ज्यादा होता है तब अन्तर को असामान्य लाभ कहा जाता है असामान्य लाभ को प्रक्रिया के डेबिट साइड में दिखाया जाता है एक ही प्रक्रिया में दोनों असामान्य हानि या असामान्य लाभ नहीं हो सकते इसे लागत P&L A/C में दिखाया जाता है

असामान्य लाभ की लागत :->

Cost of Abnormal Gain =

$$= \frac{\text{Normal Cost of the Normal Output}}{\text{Normal Output}} \times \text{Abnormal Gain (in unit)}$$

तेल की उत्पादन प्रक्रिया :->

इस प्रक्रिया पद्धति के अन्तर्गत तेल की उत्पादन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है जैसे - नारियल सरसों, मूंगफली इत्यादि।
कच्चे माल को तैयार करने के लिए तीन प्रक्रियाएँ करनी पड़ती है ये इस प्रकार है-

1) पीडन प्रक्रिया :- इस प्रक्रिया में कच्चे माल जैसे नारियल या मूंगफली ~~का~~ सरसों के बीज को खरीदकर तथा बाद में पेरकर या दबाकर मशीनों के द्वारा तेल निकाला जाता है। इस कच्चे माल को अन्य खर्चों जैसे मजदूरी बिजली, स्टीम रसायन तथा पीडन प्रक्रिया से सम्बन्धित उपरिव्ययों के साथ पीडन प्रक्रिया के डेबिट साइड में दिखाया जाता है कच्चा तेल पीडन प्रक्रिया का उत्पाद होता है तथा खली खाली थैलों की बिक्री तथा अन्य उपोत्पाद को Cr साइड में दिखाया जाता है यदि पीडन प्रक्रिया के Dr. Cr. के खाते में अन्तर है तो इसे भार में कमी मानना चाहिए तथा इस प्रक्रिया के क्रेडिट साइड में दिखाना चाहिए

2. **शोधन प्रक्रिया** → पीडन प्रक्रिया के उत्पाद कच्चे तेल को शोधन प्रक्रिया के Dr. साइड में लागत पर हस्तांतरित किया जाता है और शोधन प्रक्रिया से सम्बन्धित खर्चे जैसे मजदूरी, पावर को शोधन प्रक्रिया के Dr. में दिखाया जाता है। यदि इस प्रक्रिया में कोई अवशेष या उपोत्पाद होता है और इसका बिक्री मू० है तो इसे Cr. साइड में दिखाया जाता है।

3. **अन्तिम स्वरूप प्रक्रिया** → उत्पादित तेल को बिक्री योग्य तब बनता है जब यह अन्तिम स्वरूप प्रक्रिया से होकर गुजरता है इस तेल को ड्रमों, केनों, पीपों में पैक किया जाता है इसलिए पैकिंग के खर्चे को अन्य खर्चों जैसे मजदूरी, पावर, मरम्मत, उपरिव्ययों के साथ Dr. किया जाता है। उपोत्पाद, अवशेष या भार में कमी को फीनिशिंग प्रक्रिया में Cr. किया जाता है। कुल लागत को उत्पादित संख्या से भाग करके प्रति इकाई लागत निकाली जाती है।

सह उत्पाद या संयुक्त उत्पाद और उपोत्पाद लागत पद्धति → (सह उत्पाद) जब दो या दो से अधिक उत्पादों का उत्पादन एक साथ एक ही सामग्री से हो जाता है तो इसे सह उत्पाद कहते हैं इन्हें अलग करके बाजार में बेचने के लिए स्वतंत्र रूप से विकसित किया जाता है अलग करने के बाद इन उत्पादों की आगे प्रक्रिया भी की जा सकती है और नहीं भी। Ex.

1) गन्ना : गुड़, चीनी, खांड, शराब एवं एल्कोहल पदार्थ, पेपर, आदि।
2) तेल उद्योग : पट्रोल, डीजल, मोबाइल तेल, मिट्टी का तेल, पैराफीन।

उपोत्पाद → जब एक ही प्रक्रिया में, एक साथ दो या दो से अधिक उत्पादों का उत्पादन होता है परन्तु एक उत्पाद जिसकी दूसरे उत्पाद की तुलना में ज्यादा महत्ता तथा ज्यादा मूल्य होता है तो उसे प्रमुख उत्पाद और जिसका कम मूल्य होता है उसे उपोत्पाद कहा जाएगा। जैसे :- घी तैयार करने में बचे हुए छोटे-२ कण, दूध से मक्खन और लस्सी बनते हैं, मक्खन Main Product और लस्सी को By Product कहा जाएगा।

अन्तर विधि लाभ :-

इस विधि में एक प्रक्रिया का उत्पाद अगली प्रक्रिया में उत्पादन लागत पर हस्तांतरित नहीं की जाती बल्कि बाजार मूल्य या लागत में लाभ जोड़कर हस्तांतरित किया जाता है इसके कई कारण है

1) उत्पाद लागत को बाजार मूल्य के साथ तुलना करने के लिए।
2) उत्पादन से जुड़ी प्रत्येक विभाग या प्रक्रिया की योग्यता व अयोग्यता जानने के लिए।
3) उत्पादन लागत को गोपनीय रखने के लिए।
4) फैक्ट्री में उत्पादन के लाभ प्राप्त करने के लिए

जब अन्तर लाभ विधि अपनाया जाता है तो स्टॉक के लिए लागत कीमत पर नियोजन बनाया जाता है अन्तिम स्टॉक में लाभ की गणना के लिए तथा इस दौरान शुद्ध लाभ प्राप्ति के लिए प्रक्रिया खाते की प्रत्येक साईड में तीन खाते बनाए जाते हैं तथा प्रक्रिया खाते में अन्तिम ~~खाते~~ स्टॉक को Cr. साइड में दिखाने की जगह इसको प्रक्रिया खाते की Dr. साइड में से घटा दिया जाता है।

Cost of Stock

$$= \frac{\text{Total of Cost Column before C/S} \times \text{Value of C/S}}{\text{Total of total Column before C/S}}$$

समतुल्य उत्पादन :-

निर्माणाधीन कार्य या अर्द्ध-निर्मित कार्य को पूर्णतया निर्मित इकाइयाँ (केवल मानना) बनाना समतुल्य उत्पादन कहलाएगा।

Exh. 1 जनवरी 1920 को 3000 इकाइयों के लिए काम प्रारम्भ किया लेकिन 31 जनवरी तक कोई भी इकाईया पूर्णतया तैयार नहीं थी परन्तु इन इकाइयों पर 80% तक काम हो चुका था या 80% तक तैयार हो चुकी थी तो हम यह कह सकते हैं कि इस महीने के दौरान $(3000 \times \frac{80}{100}) = 2400$ समतुल्य उत्पादन हुआ।

यदि निर्मित इकाइयों को देखें तो योग्यता जीरो थी परन्तु समतुल्य उत्पादन की अवधारणा को देखते है तो जनवरी 2010 के दौरान 2400 इकाइयों का उत्पादन हुआ और योग्यता स्तर 80% का था।

Equivalent Unit :- Actual Unit in progress of Manufacturing × Percentage of work completed

समतुल्य उत्पादन की गणना :- The ~~steps~~ are

(1) Opening work in progress × Work not done

Add :- Units completed during the period (i.e. units started less C/S)

Add :- Closing stock × Work done

संयुक्त उत्पादों का लेखा- जोखा।

संयुक्त उत्पाद एक ही सामग्री तथा एक ही प्रक्रिया से उत्पादित किए जाते हैं जब तक इन उत्पादों को अलग न किया जाए इनकी कोई पहचान नहीं होती इस बिन्दु को SPLIT OFF POINT के नाम से जाना जाता है प्रथक्कीकरण बिन्दु से पहले की गई लागत को संयुक्त लागत कहा जाएगा तथा संयुक्त उत्पादों के लेखे का अर्थ संयुक्त लागत को संयुक्त उत्पादों में उनका हिस्सा बाटने से है।

संयुक्त उत्पादों में मुख्य समस्या तथा आधारभूत समस्या यह होती है कि संयुक्त लागत का बंटवारा किस प्रकार किया जाए इसके लिए कई विधियां हैं

1) भौतिक इकाई विधि।
2) भौतिक इकाई लागत विधि।
3) बाजार मूल्य विधि
   a) प्रथक्कीकरण बिंदु पर
   b) पुनः प्रक्रियाकरण के पश्चात
4) बिक्री मूल्य विधि।
5) सर्वेक्षण विधि।
6) सीमांत अंशदान विधि।
7) शुद्ध वसूली मूल्य या विपरीत लागत विधि।

Unit IV

Operating Costing

परिचालन लागत तकनीक लागत लेखांकन की एक ऐसी तकनीक है जो उन इकाइयों पर लागू होती है जिनके द्वारा वस्तुओं का उत्पादन नहीं किया जाता है बल्कि उनके द्वारा अपने ग्राहकों या उपभोक्ताओं को सेवाएं प्रदान की जाती हैं उदाहरण के लिए टेलीफोन, मोबाइल, बिजली, शिक्षा।

परिचालन लागतें सामान्यत: अवधिगत लागत होती हैं क्योंकि एक अवधि विशेष के व्यय इकट्ठे रहते हैं जैसे एक दिन सप्ताह, पाक्षिक, महीना या एक वर्ष।

लागतों का वर्गीकरण → परिचालन लागत में सेवाओं को प्रदान करने के लिए विभिन्न लागतों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जाता है :-

a) **स्थायी लागतें** :- स्थायी लागत वे लागत हैं जो समय के अनुसार की जाती हैं तथा इन खर्चों को वहन किया जाता है चाहे सेवा प्रदान की गई हो या नहीं। उदाहरण के लिए बीमा, पूंजी पर ब्याज, ह्रास।

b) **रख-रखाव लागत** :- ऐसे सभी खर्चे जो मशीन या वाहन या होटल को सही स्थिति में या चालू हालत में रखने के लिए किए

जाते है जैसे मरम्मत, तेल देना, ग्रीस करना

c) संचालन व्यय → ये खर्चे मशीन को प्रयोग करने से सम्बन्धित होते है मशीन के ज्यादा प्रयोग से ज्यादा खर्चे और कम प्रयोग से कम खर्चे होते है इसलिए इनको परिवर्तनशील लागत भी कहा जाता है इनमे पैट्रोल, डीजल, बिजली आदि।

Daily log Sheet → ~~परिवहन~~ सेवाएँ प्रदान करने वाली संस्था अपने सभी खर्चों को एक कार्य पुस्तक मे लिखती है जिसे Daily log Sheet कहते है जैसे परिवहन सेवाओं के खर्चों को इकट्ठा करने के लिए एक कार्यपुस्तक प्रत्येक वाहन के लिए रखी जाती है कार्यपुस्तक बनाने से निम्न विषयों मे सहायता मिलती है

1) प्रत्येक बस के एक दिन के फेरे।
2) यात्रा के दौरान कितने यात्रियों ने यात्रा की।
3) पैट्रोल व डीजल का उपयोग।
4) वाहनों को कितने समय के लिए प्रयोग मे नहीं लाया गया और इसका क्या कारण है

Daily log Sheet

Vehicle NO ______ Date ______
Driver NO. and name ______ Garage out time ______
Route NO. ______ Garage in time ______
Licence No. ______
Registration No. ______

Trip particulars

Trip No.	Place from	Place to	Tons or Package		Kilo. meters	Time		Remarks
			Out	Collected on Route		Out	In	

Supplies	Time of workers	Analysis of Time lost
Petrol ______	Driver ______	Accident ______
Diesel ______	Mechanic ______	Traffic Delay ______
Grease ______	Cleaner ______	Loading ______
Mobiloil ______	Conductor ______	Unloading ______
		Others

प्राय: प्रति इकाई लागत निकालने के लिए दो प्रकार की सेवाओं को जोड़ा जाता है इसे मिश्रित इकाई भी कहते हैं जैसे — टन मील, टन किलोमीटर

वस्तुओं की परिवहन सेवाओं के अन्तर्गत लागत इकाई टन किलोमीटर या टन मील में निकाली जाती है ये निम्न दो प्रकार की होती है

1) वाणिज्यिक टन किलोमीटर ⇒ इसमें सबसे पहले ढोया जाने वाले माल का औसत निकाला जाता है और तब उसे जितनी दूरी तय की है उससे गुणा कर देते हैं

2) निरपेक्ष टन किलोमीटर ⇒ इसमें प्रत्येक स्टेशन के लिए कितना माल ढोया गया और कितनी दूरी तय की गई इस बात को ध्यान रखना जाता है प्रत्येक स्टेशन से तय की गई दूरी को ले भेजे गए माल से गुणा करके इन सभी को जोड़ कर निकाला जाता है

ऐसा नमूना जिस पर विभिन्न लागतों को विभिन्न मदों में बाँटा जाता है, जैसे स्थायी रखरखाव और संचालन और तब प्रति इकाई लागत दी गई लागत के आधार पर निकाली जाती है तो, इसे परिचालन लागत विवरण के नाम से जाना जाता है

Performa of Transport Co.

Vehicle No. (Expenses)			
A) Fixed Cost :			
Garage Rent			
Insurance			
Road Tax			
Total			
B) Maintenance Cost			
Tyre & Tube			
Paints			
Repairs			
Total			
C) Running Cost			
Diesel			
Engine Oil			
Wages of Driver & Cleaner			
Depreciation			
Total			
Grand Total = A+B+C			
Cost Per tonne Km = Total Exp. / Tonne Km. Travelled			

बिजली की उत्पादन :- एक इकाई बिजली का उत्पादन करने से कितनी लागत आती है उसके लिए लागत विवरण बनाया जाता है। प्रमुख पावर स्टेशन में लागत विवरण बनाने के लिए बिजली को दो भागों में बाटा जाता है।

1) भाप का उत्पादन
2) बिजली का उत्पादन

Power house Cost Statement

Powerhouse Station --- Month
Steam Produced --- lbs Unit of electricity Generated
Steam used for generation: --- lbs

Particular	Total Cost	Cost Per lb
A) Steam Production Cost		
Coal & Coke		
Water		
Water Softener		
Wages (Coal Handling)		
Repair		
Stores		
Total Production for month ---lbs		
Less used in Heating --- lbs		

B) Electricity Generation		
Cost of Steam used (... lbs)		
Operators wages		
Store		
Repair & Maintenance		
Depreciation		
Cost of generate of electricity		
Total Unit Generated -- lbs		
Cost Per Unit = Total Cost / Total Units		

3) कैन्टीन लागत तथा होटल लागत :-

बहुत की संस्थाएं अपने कर्मचारियों को कैंटीन सुविधाएं प्रदान करती हैं ये कैन्टीन सर्विस चाय, कॉफी पेय पदार्थ तथा भोज या तो मुफ्त या कम मूल्य पर देती है इनकी लागतों को निम्न भागों में बाटते है

1) Provision — चाय, बिस्कुट, दूध, कॉफी।
2) Labour — रसोइया, वेटर्स आदि का वेतन।
3) Service of fuel & Power — गैस, कोयला, बिजली
4) Consumable Stores — क्राकरी, ग्लासवेयर
5) Miscellaneous — किराया, कर, बीमा, टैक्स।

Hotel / Canteen Cost Statement

Name of Meals

	Total Cost		Cost Per Meal		Remarks
	This month	Cummulative Total	This Month	Total	
A) Provisions :-					
Tea					
Coffee					
Cold Drink					
Milk					
eggs					
Meat					
Fish					
2) Wages & Salaries					
Supervisors					
Cooks					
Cooking Assistants					
C) Fuel & Power					
Steam					
Gas					
Coal					
Power					
d) Consumable Store					
Table Linen					
Cutlery					
Crockery					
Cleaning Materials					
E) Mis. Exp.					
Rent & Rates					
Taxes					
Insurance					
Depreciation					
Total					
Receipts from					
Company Subsidy					
Sales (₹)					
Total (₹)					
P&L (₹)					

Monthly Statement of Canteen Cost

Particular	This month	This Month last Year
Material Consumed	—	—
Labour & Supervision	—	—
Other overheads	—	—
Total		
Less :-		
Sale by Coupons		
Subsidy Received (A)		
No. of Employees Served (B)		
Cost Per Employee (A ÷ B)		

Cinema Hall Costing :-

जो संस्थाएँ या इकाईयाँ लोगों को बड़े पर्दे पर फिल्में दिखाकर उनका मनोरंजन करती है उनके द्वारा इसकी लागत प्रति शो प्रति व्यक्ति के आधार पर निकाली जाती है सिनेमा हाल के विभिन्न खर्चे इस प्रकार है- प्रिंट का किराया, भवन कर, मनोरंजन कर बिजली जनरेटर, बीमा, स्टाफ के खर्चे इत्यादि

Operating Cost Sheet for Cinema Hall.

Particulars	
A) Fixed Charges	
1) Manager Salary	—
2) Clerk Salary	—
3) Administrative exp.	—
4) Dep. on Machinery, Building.	—
Total (A)	—
B) Variable Charges	
1) Electricity	—
2) Hire of Print	—
3) Advertisement	—
4) Misc. Expenditure	—
Total (B)	—
Total operating Cost (A + B)	—
Cost Per Show Per Person -	—

Cost Per Show Per Person = Total Operation Cost / No. of ~~Person~~ Man Show

Integral Accounting

एकीकृत लेखांकन व्यवस्था से अभिप्राय ऐसी व्यवस्था से है जिसमें लागत तथा वित्तीय खाते एक ही खाता बही में मिले होते हैं लागत एवं वित्तीय खातों के लिए पृथक पुस्तकें नहीं रखी जाती। इसमें लाभ तथा हानि की केवल एक ही राशी आती है इसमें लाभ या वित्तीय लेखों के लाभों को मिलाने के लिए मिलान विवरण बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

एकीकृत लेखांकन के आवश्यक लक्षण :-

1) लेनदारों के खातों को रखने के लिए एक क्रय खाताबही तथा देनदारों के खातों को रखने के लिए विक्रय खाताबही रखी जाती है

2) सामान्य खाताबही को निम्न खातों के लिए पुनः व्यवस्थित किया जाता है

1) भण्डार नियंत्रण खाता।
2) मजदूरी नियंत्रण खाता।
3) उपरिव्यय नियंत्रण खाता।
4) चालू कार्य खाता।
5) विक्रय लागत खाता।
6) विक्रय नियंत्रण खाता।
7) पूर्व भुगतान खाता।

iii) भण्डार गृह सम्बन्धी लेनदेनों को भण्डार गृह नियन्त्रण खाते में रिकार्ड किया जाता है।

iv) मजदूरी नियंत्रण खाते को देय मजदूरी से डेबिट तथा रोकड़ या बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है।

v) उपरिव्ययों से उपरिव्यय नियन्त्रण खाते को Dr. तथा बैंक या रोकड़ या विविध लेनदारों को Cr. किया जाता है।

2. उपरिव्यय से उपरिव्यय नियन्त्रण खाते को Dr. तथा बैंक या रोकड़ या विविध लेनदारों को Cr. किया जाता है।

अवधि के अन्त में प्रत्यक्ष सामग्री के योग से चालू कार्य खाते को Dr. और भण्डार गृह नियन्त्रण खाते को Cr. किया जाता है।

एकीकृत लेखांकन के लाभ →

1) मिलान विवरण की आवश्यकता नहीं।

2) दोहरापन नहीं → एकीकृत लेखांकन व्यवस्था में दोहरे लेखे रखने की आवश्यकता नहीं होती जिसके परिणामस्वरूप कुशलता में वृद्धि होती है।

3) मितव्ययी → दोहरापन न होने से समय श्रम व धन की बचत होती है।

iv) लेखांकन की केन्द्रीयकरण → लेखांकन के केन्द्रीयकरण द्वारा संस्था पर उचित नियन्त्रण रखा जा सकता है।

v) लागत आँकड़ों की शुद्धता।

v) यांत्रिकी लेखाविधि के लिए उपयुक्त :- इसी विधि के लिए वित्तीय खातों तथा लागत खातों के संहिताकरण की आवश्यकता पड़ती है ताकि कम्प्यूटर द्वारा सूचनाओं का प्रयोग शीघ्रतापूर्वक किया जा सके।

vi) सूचनाओं की समय पर उपलब्धता → यान्त्रिक लेखाविधि अपनाने के कारण सूचनाएँ सही समय पर उपलब्ध हो जाती है जिससे प्रबन्ध के विभिन्न स्तरों पर निर्णय लेने में आसानी रहती है।

viii) **समन्वय** → इस व्यवस्था द्वारा लेखांकन विभाग के विभिन्न कार्यों में समन्वय स्थापित करने में आसानी रहती है क्योंकि सभी कार्यों को एक उद्देश्य की पूर्ति हेतु संगठित तथा कार्यशील किया जाता है।

Page No. ____ Date ____

~~Marginal~~

Standard Costing

प्रमाप लागत का आशय लागत लेखांकन की उस प्रणाली से है जिसके अन्तर्गत किसी उत्पाद की वास्तविक लागत ज्ञात की जाती है। कार्य पूरा होने पर प्रमाप लागत की तुलना वास्तविक लागत से की जाती है और उनके बीच अन्तर के कारणों को ढूंढा जाता है ताकि भविष्य में वास्तविक लागत को प्रमापित लागत के अनुरूप रखा जा सके।

W.B. Lawrence, "प्रमाप लागत प्रणाली लागत लेखांकन की एक विधि है जिसमें कुछ व्यवहारों के अभिलेखन के लिए प्रमापित लागतों का प्रयोग किया जाता है और प्रमाप के अन्तरों की राशि और कारण ज्ञात करने के लिए वास्तविक लागतों की प्रमापित लागतों से तुलना की जाती है।"

विशेषताएँ :

1) प्रमापों का निर्धारण करना
2) वास्तविक लागत का निर्धारण करना
3) लागत अभिलेखन
4) तुलना
5) विचरणों की गणना
6) विचरण के कारणों की खोज

7) विकल्पों का पता लगाना
8) प्रबन्धकों को रिपोर्ट करना।

प्रमाप लागत लेखांकन के उद्देश्य :-

1) कार्यकुशलता में वृद्धि → प्रभावपूर्ण नियंत्रण से कार्यकुशलता एवं उत्पादकता में वृद्धि होती है।

2) उत्तरदायित्वों का निर्धारण :→ प्रमाप लागत और वास्तविक लागत में अन्तर कर विचरणों का पता लगाया जाता है और इसके लिए उत्तरदायित्व कौन है इसका निर्धारण होता है।

3) नियंत्रण :→ इसके माध्यम से प्रमापित एवं वास्तविक लागतों की तुलना कर वस्तुस्थिति को नियंत्रित किया जाता है।

4) प्रमाप लागत से बजटरी नियंत्रण व्यवस्था को प्रभावकारी एवं व्यवस्थित किया जाता है।

5) प्रबन्ध को सूचना :- विचरणों के कारण को प्रबन्ध को सूचना दी जाती है ताकि उनमें सुधारात्मक कार्यवाही की जा सके।

6) प्रबन्ध को प्रगतिशील बनाने में सहायक।
7) पूर्वानुमान :- प्रमाप लागत विधि से उत्पादन विक्रय और लाभ में कमी या वृद्धि की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रमाप लागत विधि के लाभ :→
1) यह एक मितव्ययी प्रणाली है।
2) यह लागत नियंत्रण में सुविधा प्रदान करती है।
3) अकुशलता को दूर करना या समाप्त करना।
4) कार्य में कटौती → इसके अन्तर्गत केवल आवश्यक सूचनाओं को ही लेखा किया जाता है, अनावश्यक आंकड़ों को छोड़ दिया जाता है।
5) तुलनीयता।
6) नीति - निर्धारण में सहायता मिलती है।
7) कार्यक्षमता में वृद्धि।
8) उत्पादन मात्रा को अध्ययन।
9) सामग्री के प्रयोग में प्रभाव।
10) पूर्वानुमान में सहायक।
11) नैतिक प्रभाव।
12) विचरण का निर्धारण → विचरण का निर्धारण होने पर सम्बन्धित व्यक्ति को उनके कर्त्तव्य के प्रति सजग किया जा सकता है।
13) कार्यक्षमता का मापन।

प्रमाप लागत की सीमाएँ :→
1) अमितव्ययी :→ लघु स्तरीय व्यवसाय इसकी लागत को वहन नहीं कर पाते हैं।
2) सीमित क्षेत्र :→ इसका प्रयोग केवल उन्हीं संस्थाओं में संभव है जहाँ प्रमापित

वस्तुओं का उत्पादन होता है

3) विशिष्टों की आवश्यकता।

4) उत्पादन के तरीके ⇒ जिन उद्योगों में बार-2 तकनीकी परिवर्तन की आवश्यकता होती है वहां प्रमाप लागत विधि को अपनाया जाना सम्भव नहीं है।

5) उत्तरदायित्वों का निर्धारण वास्तव में एक जटिल काम है।

6) प्रयोग एवं अनुसंधान की आवश्यकता।

7) बजटरी नियन्त्रण की आवश्यकता।

प्रमाप लागत विधि की स्थापना के लिए प्रारम्भिक विधि :-

1) लागत के केन्द्रों की स्थापना ⇒ लागत केन्द्रों की स्थापना आवश्यक है। लागत केन्द्रों की स्थापना से यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि किस कार्य के लिए कौन उत्तरदायी है।

2) लेखों का वर्गीकरण :- व्ययों की विभिन्न मदों को शीघ्रतापूर्वक लिखते एकत्रित करने और विश्लेषण करने के लिए लेखों की प्रत्येक मद को विभिन्न संकेत चिन्हों में विभाजित कर देना चाहिए जैसे

1–10 Direct Material
11–20 Direct labour
21–30 Indirect Material

3) प्रमापों के प्रकार ⇒ प्रमाप निम्न प्रकार के होते हैं।

1) आदर्श प्रमाप :- यह एक ऐसा प्रमाप है जो अनुकूलतम अवस्थाओं जैसे - अधिकतम उत्पादन तथा बिक्री, उचित सामग्री और श्रम की कल्पना कर निर्धारित किया जाता है यह काफी उच्च श्रेणी का होता है तथा वास्तविक जगत में अव्यावहारिक होता है।

2) आपेक्षित प्रमाप :- ये प्रमाप व्यावहारिक होते हैं फिर भी परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर इनमें परिवर्तन करने पड़ते हैं।

3) सामान्य प्रमाप ⇒ यह सामान्य स्तर का होता है जो मौसमी एवं चक्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाता है यह स्तर लम्बी अवधि तक चलने वाला होता है।

4) मौलिक प्रमाप :- इसका निर्माण निर्देशांक की भांति होता है। इसमें भी किसी वर्ष को आधार मान लिया जाता है।

5) ऐतिहासिक प्रमाप ⇒ यह भूतकाल में निर्धारित प्रमाप होता है। पिछले वर्षों की अकुशलताएं इस प्रमाप में सम्मिलित होने के कारण यह सुदृढ़ता के साथ नहीं होता।

9) प्रमाप लागत का संगठन ⇒ प्रमाप लागत विधि के सफल संचालन के लिए व्यावसायिक इकाई का सुदृढ़ संगठन आवश्यक होता है साथ ही निर्धारित प्रमाप पर उनका विश्वास भी होना चाहिए।

लागत विचरण विश्लेषण ⇒

प्रमाप लागत और वास्तविक लागत का अन्तर ही लागत विचरण कहा जाता है जब वास्तविक लागत प्रमापित लागत से कम हो तो विचरण अनुकूल होगा और जब वास्तविक लागत प्रमापित लागत से अधिक हो तो विचरण लागत प्रतिकूल होगा प्रतिकूल विचरण होने पर सुधारात्मक कार्यवाही की जानी चाहिए।

विचरणों के प्रकार

1) सामग्री विचरण
2) श्रम विचरण
3) परिवर्तनीय व्यय विचरण
4) स्थायी व्यय विचरण
5) विक्रय विचरण,

सामग्री विचरण ⇒

सामग्री विचरण सामग्री के वास्तविक व्ययों एवं पूर्व अनुमानित व्ययों के बीच अन्तर को प्रदर्शित करता है सामग्री विचरण निम्न प्रकार के होते हैं:

1) सामग्री लागत विचरण ⇒ यह विचरण वास्तविक उत्पत्ति मात्रा की प्रमापित लागत और वास्तविक लागत के अन्तर को प्रदर्शित करता है इसकी उत्पत्ति सामग्री के मूल्य में कमी या वृद्धि के कारण तथा सामग्री की मात्रा के कम या अधिक प्रयोग के कारण होती है इसे अग्रलिखित ~~ढंग~~

Material Cost Variance
= Material Price Variance + Material Usage Variance

$$MCV = TSC - TAC$$

$$TSC = SP \times SQ$$

$$TAC = AP \times AQ$$

यदि दो या दो से अधिक सामग्री को प्रयोग में उत्पादन होता है तो SQ की गणना कुछ कठिन हो जाती है।

$$\frac{SQ \times TAQ}{TSQ}$$

b) Material Price Variance → प्रयुक्त सामग्री के वास्तविक मूल्य तथा प्रमाप मूल्य के अन्तर को सामग्री मूल्य विचरण कहते हैं।

MPV = AQ (SP − AP)

c) Material Usage Variance :- यह वस्तु की प्रमापित मात्रा और वास्तविक मात्रा के बीच अन्तर को प्रदर्शित करता है।

MUV = SP (SQ − AQ)

यदि प्रयुक्त सामग्री की वास्तविक मात्रा प्रमापित मात्रा से कम हो तो विचरण अनुकूल होगा और अधिक होने पर प्रतिकूल होगा।

सामग्री उपयोग विचरण को पुनः 3 भागों में विभाजित किया जा सकता है

1) सामग्री मिश्रण विचरण
2) सामग्री संशोधित उपयोग या उप उपयोग विचरण
3) सामग्री उत्पादन विचरण।

1) सामग्री मिश्रण विचरण → यह विचरण तब होता है जब उत्पादन में एक से अधिक प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है। सामग्री विचरण संशोधित प्रमापित मात्रा एवं वास्तविक मात्रा के अन्तर में प्रमापित मूल्य के गुणनफल के बराबर होता है।

M.M.V = SP (RSQ − AQ)

RSQ = (Standard Q of any one Material × TAQ of all type of Mate) / (Total of S.Q of all type of Material)

RSQ > AQ = favourable
RSQ < AQ = Unfavourable

2) Material Revised Usage or Sub Usage Variance

सामग्री उपयोग विचरण में से मिश्रण विचरण अलग करने के बाद जो शेष रह जाता है उसे संशोधित उपयोग अथवा उप उपयोग विचरण कहते हैं।

SQ > RSQ = favourable
SQ < RSQ = Unfavourable

MRUV = SP (SQ − RSQ)

$$RSQ = \frac{SQ \times TAQ}{TSQ}$$

3) सामग्री उत्पादन विचरण → सामग्री उत्पादन विचरण तब उत्पन्न होता है जब उत्पादन की दर ज्ञात हो। सामग्री उत्पादन विचरण उपयोग विचरण का वह भाग है जो उल्लेखित

प्रमापित उत्पादन एवं प्राप्त वास्तविक उत्पादन में अन्तर के कारण होता है।

उत्पादन का प्रमाप निर्धारित करते समय केवल सामान्य क्षय को ही ध्यान में रखा जाता है। कभी-2 वास्तविक एवं प्रमाप उत्पादन में अन्तर पाया जाता है यही अन्तर उत्पादन विचरण कहलाता है।

(i) $MYV = ASC(SL \text{ on } AM - AL \text{ on } AM)$

ASC = Average Standard Cost of output
SL on AM = Standard loss on Actual Mix
AL on AM = Actual Loss on Actual Mix

(ii) $MYV = ASC(SY \text{ on } AM - AY \text{ on } AM)$

Labour Variance

प्रत्यक्ष श्रम की प्रमापित लागत तथा वास्तविक लागत के बीच अन्तर के कारणों को जानने के लिए श्रम विचरणों की गणना की जाती है ये निम्न प्रकार के होते हैं

1) श्रम लागत विचरण (Labour Cost Variance)

किसी उत्पादनी की वास्तविक कुल श्रम लागत और प्रमापित कुल श्रम लागत के बीच के अन्तर को श्रम लागत विचरण कहते हैं। श्रम दर और श्रम दक्षता विचरण का योग श्रम लागत विचरण कहलाता है।

$$LCV = LRV + EV$$

or

$$LCV = SC - AC$$
$$= (ST \times SR) - (AT \times AR)$$

2) श्रम दर विचरण :- यह विचरण श्रम लागत विचरण का वह भाग होता है जो प्रमापित मजदूरी दर और वास्तविक मजदूरी में अन्तर के कारण उत्पन्न होता है।

$$LRV = AT(ST - AR)$$

iii) श्रम दक्षता विचरण :- यह विचरण किसी एक निश्चित कार्य में पूर्व निर्धारित श्रम की मात्रा में कम या अधिक श्रम लगने के कारण उत्पन्न होता है।

$$LEV = SR(ST - AT)$$

LEV = (Idle Time Variance + LMV + Labour Sub-efficiency Variance)

यदि Idle Time नहीं दिया होता है तो

$$LEV = LMV + LSeV$$

4) व्यर्थ समय विचरण (Idle Time Variance) ITV

$ITV = IT \times SR$

2) श्रम मिश्रण विचरण → जब कारखाने में विभिन्न श्रेणी के मजदूर नियुक्त किए जाते हैं तो SM और AM के अन्तर होने के कारण यह विचरण उत्पन्न होता है।

1) जब S Hour और Actual Hour बराबर हो

$LMV = SR(ST - AT)$

or

$LMV = (SC\ of\ SM) - (SC\ of\ AM)$

2) जब प्रमापित घंटों और वास्तविक घंटों के योग में अन्तर हो तो निम्न सूत्रों का प्रयोग किया जाता है

1) $LMV = SR(RST - AT)$

or

$LMV = (SC\ of\ RST) - (SC\ of\ AM)$

$$RST/RSM = \frac{ST \times TAT}{TST}$$

ST = Standard time RST = Revised Standard time

TAT = Total Actual Time

TST = Total Standard Time

vi) श्रम उप दक्षता विचरण →

यह विचरण तब उत्पन्न होता है जब दो या दो से अधिक प्रकार के श्रम मिश्रण से उत्पादन कार्य सम्पन्न हुआ हो और श्रम मिश्रण में परिवर्तन किया जाता हो यदि ST और AT का योग समान हो तो श्रम उप दक्षता उपस्थित नहीं होगा।

$LScV = SR(ST - RST)$

vii) श्रम उत्पादन विचरण → यह प्रमापित उत्पादन की तुलना में कमी या वृद्धि के कारण श्रम लागत में विचरण को बताता है।

$LYV = SLC\ Per\ unit\ of\ output\ (SY\ in\ Unit\ of\ output - AY\ in\ Units\ of\ output)$

$$SLC\ per\ unit\ of\ output = \frac{Standard\ Per\ Gang\ hour}{Standard\ output\ per\ Gang\ hour}$$

VOV (Variable Overhead Variance)

पूर्व निर्धारित परिवर्तनीय व्यय तथा वास्तविक परिवर्तनीय व्यय के अन्तर को परिवर्तनीय उपरिव्यय विचरण कहते हैं।

$VOV = (SVO - AVO)$

SVO = Standard Variable Overhead

AVO = Actual Variable Overhead

परिवर्तनीय उपरिव्यय विचरण को दो भागों में बाँटा जा सकता है

1) व्यय विचरण :- यह विचरण कार्य घंटों की प्रमापित दर से व्यय तथा वास्तविक व्ययों का अन्तर होता है इसकी गणना घंटों के आधार पर की जा सकती है तथा उत्पादित इकाइयों के आधार पर भी

1) प्रमापित घंटों के आधार पर

Ex. V = (BC − AC)

BC = Budgeted Cost or Actual Hours × SR

AC = Actual Cost or A.H × AR

2) प्रमापित इकाइयों के आधार पर :-

Ex. V = (BC − AC)

BC = Budgeted Cost / SQ of Output expected in Actual Hour spent × SR)

AC = Actual Cost / Actual Production × AR

2) दक्षता विचरण :- यह विचरण श्रमिकों की कार्यकुशलता पर प्रभाव डालता है इसकी गणना भी घण्टों अथवा उत्पादित इकाइयों के आधार पर की जाती है

1) प्रमापित घण्टों के आधार पर

Ef.V = SR (SH − AH)

SH = Standard Hour required for Actual Output

2) प्रमापित इकाइयों के आधार पर

Ef.V = SR (SQ − AQ)

2. Fixed Overhead Variance :-

एक निश्चित अवधि से सम्बन्धित समस्त स्थिर व्ययों को उस अवधि में उत्पादन की जाने वाली इकाइयों या उत्पादन कार्य में प्रयुक्त होने वाले घंटों से विभाजित किया जाता है साथ ही प्रति इकाई / घंटे की दर से स्थिर व्यय का हिस्सा ज्ञात करके बजट तैयार किया जाता है इस प्रकार पूर्व निर्धारित स्थायी व्यय की तुलना वास्तविक व्यय से की जाती है इसके पश्चात अंतर एवं कारणों का विश्लेषण किया जाता है

स्थायी उपरिव्यय विचरणों के प्रकार

1) स्थायी उपरिव्यय लागत विचरण

FOCV = (SC − VC)

SC = Actual Output × SR

$$SR = \frac{\text{Budgeted F.O in the Period}}{\text{Budgeted Output in the period}}$$

On the basis of Standard Hours

$FOCV = SC - AC$

$SC = SH \times SR$

$SH = \frac{\text{Actual Output}}{\text{Standard Output per hour}}$

$SR = \frac{\text{Budgeted fixed Overhead in the period}}{\text{Budgeted hours in the period}}$

Calendar Variance :- कैलेंडर विचरण पूर्वनिर्धारित बजट के कार्यकारी दिनों तथा वास्तविक कार्यकारी दिनों के बीच अन्तर के कारण उत्पन्न होता है।

a) On the basis of Production Units

$CIV = SR(RBQ - BQ)$

$RBQ = \text{B Output for the Period} \times \frac{\text{Actual days}}{\text{Budgeted days}}$

b) On the basis of Standard Hours

$CIV = SR(RBH - BH)$

$RBH = \text{BH for the Period} \times \frac{\text{Actual days}}{\text{Budgeted days}}$

3) Yield Variance =

$FOYV = SR(SY - AY)$

4) Expenditure Variance – यह विचरण अप्रत्यक्ष सामग्री, अप्रत्यक्ष श्रम आदि के मूल्य उपयोग या क्षमता में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होता है।

a) On the basis of Unit of output:

$Ex.V = (BC - VC)$

$BC = (\text{Budgeted Quan. for Production} \times \text{SR Per Unit})$

$= (BQ \times SR)$

b) On the basis of SH

$Ex.V = (BC - AC)$

$BC = BH \times SR$

5) मात्रा विचरण :→

a) On the basis of Unit of Output:

$VV = SR(AQ - BQ)$

1) On the basis of Standard Hours:

$VV = SR(SH - BH)$

$SH = \frac{\text{Actual Output}}{\text{Standard Output per hour}}$

$$SR = \frac{\text{Budgeted F.O for the period}}{\text{Budgeted Output for the period}}$$

Sales Variance :-

पूर्व निर्धारित विक्रय एवं वास्तविक विक्रय में अन्तर को स्पष्ट करने हेतु विक्रय विचरणों की गणना की जाती है। विक्रय विचरणों की गणना के लिए निम्न दो विधियाँ प्रयोग में लायी जाती है

1) विक्रय पद्धति
2) लाभ अथवा विक्रय पद्धति

विक्रय पद्धति :→ इसके अन्तर्गत विक्रय विचरण ज्ञात करने के लिए विक्रय राशि एवं मात्रा को आधार बनाया जाता है। विक्रय विचरणों की गणना विक्रय राशि अथवा विक्रय मात्रा किसी के भी आधार पर की जाती है।

लाभ पद्धति :→ (Profit or Sales Margin Method)

इस पद्धति के अन्तर्गत विचरणों की गणना के लिए लाभ को आधार बनाया जाता है। इसके अन्तर्गत भी मात्रा व मूल्य के आधार पर गणना की जाती है।

Total Sales Margin Variance

- Sales Price Variance
- Sales Volume Variance
  - Sales Mix Variance
  - Sales Quantity Variance

बजटीय नियन्त्रण

Budgetary Control

बजट उत्पादन के विभिन्न साधनों के प्रस्तावित संयोग की वह विस्तृत सूची है जिसे प्रबन्धकों द्वारा आने वाली अवधि के लिए अत्यंत लाभकारी समझा जाता है।

व्यवसाय एवं उद्योग के सीमित आर्थिक साधनों का अनुकूलतम प्रयोग करके लाभों को अधिकतम करने के लिए बजटीय नियंत्रण एक महत्वपूर्ण प्रबंधकीय उपकरण है।

बजट का अर्थ :-

"बजट एक निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निश्चित अवधि से पूर्व तैयार किया गया उस अवधि में लागू की जाने वाली नीति या वित्तीय तथा संख्यात्मक विवरण है" — ICMA London

बजटीय नियंत्रण का अर्थ :->

"बजटरी नियंत्रण के द्वारा वास्तविक प्रगति का पता लगाया जाता है और बजट अनुमानों से उसकी तुलना करके वास्तविक उपलब्धियों की पुष्टि की जाती है अथवा बजट अनुमानों में समायोजन करके अन्तर को दूर किया जाता है और अन्तर के कारणों में सुधार किया जाता है।

बजट बनाने की सभी क्रियाओं को बजटिंग कहते हैं।

बजटरी नियंत्रण के उद्देश्य :->

बजटरी नियंत्रण के मुख्य उद्देश्य निम्न होते हैं:

1) लागत पर नियंत्रण रखना।
2) पूँजी की मात्रा की जानकारी
3) प्रशासनिक कार्यों में सहायता प्रदान करना
4) लाभ को अधिकतम करना।
5) उत्पादन की कार्यकुशलता बढ़ाना।

बजटरी नियन्त्रण के लाभ :->

1) इसके अन्तर्गत सभी विभागों के उद्देश्य निश्चित किए जाते हैं।
2) उत्पादन लागत पर नियन्त्रण।
3) समन्वय।
4) अधिकतम लाभ
5) मितव्ययिता
6) अधिकार एवं दायित्वों की स्पष्ट व्याख्या।
7) दायित्व निर्धारण।
8) अभिप्रेरणा :- इस पद्धति को लागू करने से

कर्मचारियों को अभिप्रेरणा मिलती है क्योंकि उनके लक्ष्य निर्धारित हो जाते हैं।
9) प्रमाप लागत विधि को अपनाने में मदद।
10) संस्था की कमजोरियों का निर्धारण।
11) वित्तीय आवश्यकता का पूर्वानुमान।

बजटरी नियन्त्रण की सीमाएँ :-

1) अनुमानों पर आधारित।
2) सहयोग - यदि सम्बन्धित अधिकारियों में सहयोग का अभाव पाया जाता है तो बजट की सफलता संदिग्ध हो जाती है।
3) समय का प्रभाव।
4) अत्यधिक लागत।
5) आन्तरिक संघर्ष।
6) बजट बनाने का विरोध।

Kinds of Budgets :-

1) कार्यानुसार बजट →

1) विक्रय बजट :- विक्रय बजट निर्धारित बजट अवधि की बिक्री का पूर्वानुमान है जिसे कुल मात्रा या कुल मूल्य के रूप में व्यक्त किया जाता है। विक्रय बजट के निर्माण एवं क्रियान्वन के लिए विक्रय प्रबन्धक को उत्तरदायी माना जाता है।

2) उत्पादन बजट →

उत्पादन बजट एक निश्चित अवधि के लिए निर्मित की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा एवं उन पर आने वाली लागत का अनुमान होता है। विक्रय बजट जहाँ एक ओर माँग प्रस्तुत करता है वहीं दूसरी ओर उत्पादन बजट इस माँग की पूर्ति की व्यवस्था करता है। उत्पादन बजट को तैयार करते समय उत्पादन के प्रकार, साधन, स्थान, समय, प्रारम्भिक रहतिया, अन्तिम रहतिया आदि बातों को ध्यान में रखा जाता है।

3) सामग्री बजट → सामग्री बजट उत्पादन बजट में निर्धारित उत्पादन करने में प्रयुक्त सामग्री की आवश्यकता का अनुमान लगाकर उसकी आवश्यकता के समय उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया जाता है। सामग्री बजट विक्रय एवं उत्पादन बजट पर आधारित होता है।

4) श्रम बजट :- यह बजट उत्पादन बजट द्वारा निर्धारित उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए श्रम की आवश्यकता निर्धारित करता है एवं साथ ही अपेक्षित श्रम की पूर्ति को सुनिश्चित करता है ताकि उत्पादन में किसी प्रकार की बाधा न हो।

5) प्लांट बजट :- इस बजट को बनाने का उद्देश्य उत्पादन बजट द्वारा निर्धारित उत्पादन करने के लिए पर्याप्त मशीनें एवं संयंत्र उपलब्ध कराना है। यह बजट निम्न सूचनाएं प्रदान करता है।

- मशीनों की संख्या, उत्पादन क्षमता, मशीनों का अनुमानित जीवन काल।

6) उपरिव्यय बजट :- उपरिव्यय बजट उत्पादन से सम्बन्धित अप्रत्यक्ष व्ययों का अनुमान लगाने के लिए तैयार किया जाता है।

7) अनुसंधान एवं विकास बजट :- यह बजट व्यवसाय के विस्तार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एवं उत्पादन की नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए बनाया जाता है। अनुसंधान एवं विकास बजट अनुसंधान व विकास कार्यक्रमों पर किए जाने वाले व्ययों अनुसंधान के लिए क्रय किए जाने वाले उपकरणों की लागत, ह्रास आदि के संबंध में सूचनाएँ प्रदान करता है।

2) रोकड़ बजट :- रोकड़ बजट एक ऐसा विवरण है जिसमें बजट अवधि के लिए रोकड़ का पूर्वानुमान किया जाता है इसके अन्तर्गत बजट अवधि में नकद प्राप्तियों एवं नकद भुगतानों का पूर्वानुमान किया जाता है। रोकड़ बजट किसी भी अवधि के लिए बनाया जा सकता है। यह बजट संस्था की वित्तीय आवश्यकताओं को नियोजित एवं नियन्त्रित करने में काफी सहायता करता है।

इस बजट को तैयार करते समय रोकड़ की प्राप्ति और भुगतान की प्रत्येक मद का पूर्वानुमान लगाया जाता है।

रोकड़ बजट बनाने की निम्न तीन विधियाँ हैं

i) प्राप्ति एवं भुगतान विधि :- इस विधि के अन्तर्गत बजट अवधि की अनुमानित रोकड़ प्राप्तियों एवं भुगतानों को ध्यान में रखा जाता है। इस विधि में रोकड़ का प्रारम्भिक शेष लेकर सभी अनुमानित प्राप्तियों को जोड़ दिया जाता है और भुगतानों को घटा दिया जाता है।

ii) समायोजित लाभ हानि विधि :- इस विधि में रोकड़ बजट लाभ हानि खाते द्वारा दिखाए गए लाभ को समायोजित करके बनाया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत रोकड़ के प्रारम्भिक

शेष में बजट अवधि के अनुमानित लाभों को जोड़कर एवं सभी गैर रोकड़ मदों का समायोजन करके रोकड़ का अन्तिम शेष निकाला जाता है

3) **स्थिति विवरण विधि** ⇒ इस विधि में बजट अवधि के अन्त में एक पूर्वानुमानित स्थिति विवरण तैयार किया जाता है इसमें सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्यों में हुए परिवर्तन को ध्यान में रखा जाता है यदि दायित्व पक्ष का योग सम्पत्ति पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर रोकड़ शेष होगा और यदि सम्पत्ति पक्ष का योग अधिक है तो अन्तर बैंक अधिविकर्ष होगा।

मास्टर बजट ⇒ मास्टर बजट के माध्यम से एक संस्था के समस्त बजट परिमाणों को प्रस्तुत किया जाता है मास्टर बजट बनाने के लिए कार्यानुसार बजट जैसे विक्रय बजट, उत्पादन बजट, सामग्री बजट, श्रम बजट, रोकड़ बजट आदि बनाने आवश्यक है

मास्टर बजट के अन्तिम रूप से स्वीकृत हो जाने पर इसे मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया जाता है

11) लोचशीलता के अनुसार बजट ⇒

लोचशीलता के आधार पर बजट को दो भागों में बाँटा जा सकता है

1) **स्थायी बजट** ⇒ स्थायी बजट एक ऐसा बजट है जो क्रियाशील के लिए निश्चित स्तर को स्थायी मानकर तैयार किया जाता है इस प्रकार के बजट में भावी परिस्थितियों के परिवर्तन को ध्यान में नहीं रखा जाता इसी कारण से इस बजट को व्यवसाय के लिए अधिक उपयोगी नहीं माना जाता।

2) लोचदार बजट ⇒

लोचदार बजट एक ऐसा बजट है जो विभिन्न क्रियाशील स्तरों के लिए तैयार किया जाता है लोचदार बजट में क्रियाशीलता के विभिन्न स्तर पर होने वाले व्ययों को स्थायी, परिवर्तनशील एवं अर्द्धपरिवर्तनशील वर्गों में विभाजित किया जाता है

लोचशील बजट निम्न परिस्थितियों में बनाया जाता है:

1) जहाँ संस्था नयी स्थापित की गई है और इसके उत्पाद की माँग का अनुमान लगाना संभव नहीं है

2) जहाँ संस्था की निर्यात नीति में परिवर्तन होता रहता है

3) जहाँ उत्पादन के लिए आवश्यक सामग्री व श्रम की पूर्ति अनिश्चित है।

3) अवधि के अनुसार बजट के प्रकार

1) दीर्घकालीन बजट ⇒ जो बजट एक वर्ष से अधिक अवधि के लिए तैयार किया जाता है उसे दीर्घकालीन बजट कहते हैं। पूँजीगत व्यय बजट एवं अनुसंधान तथा विकास बजट इस श्रेणी में शामिल किए जाते हैं।

3) अल्पकालीन बजट ⇒ जो बजट एक वर्ष से कम अवधि के लिए तैयार किए जाते हैं, उसे अल्पकालीन बजट कहा जाता है। रोकड़ बजट अल्पकालीन बजट है।

4) परिस्थिति के अनुसार बजट के प्रकार

i) मूल बजट ⇒ मूल बजट एक ऐसा बजट है जिसे दीर्घकाल के लिए बिना परिवर्तन किए तैयार किया जाता है।

ii) चालू बजट ⇒ चालू बजट एक ऐसा बजट है जो अल्पकाल में प्रयोग के लिए बनाए जाते हैं। ये बजट वर्तमान परिस्थिति से सम्बन्धित होते हैं।

Responsibility Accounting

उत्तरदायित्व लेखांकन

उत्तरदायित्व लेखांकन से अभिप्राय ऐसे विभिन्न यन्त्रों से है जो कि प्रबन्धकीय लेखापाल द्वारा प्रयोग किए जाते हैं, जो उच्च प्रबन्धकों द्वारा निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किए गए कार्य निष्पादन को मापने के लिए प्रयोग किए जाते हैं इसलिए यह प्रबन्धकीय लेखांकन की एक ऐसी विधि है जो विभिन्न विभागों की कार्य निष्पादन को मापने के लिए प्रयोग की जाती है।

Andersson के अनुसार "उत्तरदायित्व लेखांकन एक ऐसी लेखांकन प्रणाली है जिसमें सूचनाओं और आंकड़ों को एकत्रित करके इस प्रकार रिपोर्ट तैयार की जाए ताकि कम्पनी का उत्तरदायित्व ढाँचा तैयार किया जा सके।"

Step Involved in Responsibility Accounting

1) प्रथम उत्तरदायित्व केन्द्र निर्धारित किए जाते हैं। प्रत्येक उत्तरदायित्व केन्द्र एक उत्तरदायित्व प्रबंधक के अधीन रखा जाता है।

2) प्रत्येक उत्तरदायित्व केन्द्र का बजट और लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं उत्तरदायित्व के

को लक्ष्य संबंधित अधिकारी को संप्रेषित कर दिया जाता है।

3) प्रत्येक उत्तरदायित्व केंद्र का परिणाम रिकार्ड करके संबंधित अधिकारी को भेज दिया जाता है। वास्तविक परिणाम की लक्ष्य से तुलना की जाती है।

4) विचरण पास जाने पर संबंधित अधिकारी का नाम उच्च प्रबंधक तक पहुंचाया जाता है।

5) आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाकर और संबंधित अधिकारी अथवा उत्तरदायित्व केन्द्र को संप्रेषित कर देते हैं।

उत्तरदायित्व लेखांकन का सार सही सूचना सही व्यक्ति को सही समय पर पहुँचाना है।

उत्तरदायित्व केन्द्र →

प्रभावशाली नियन्त्रण के लिए संगठन को छोटी-2 इकाई में बांटा जाता है। यह इकाई आर्यपूर्ण पामिति विभाग और विभाजन के रूप में हो सकती है। इन्हीं विभागों या विभाजनों को उत्तरदायित्व केन्द्र कहा जाता है।

उत्तरदायित्व केन्द्र के प्रकार :-

उत्तरदायित्व केन्द्र को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1) लागत अथवा खर्च केन्द्र :→

लागत केन्द्र संगठन की एक इकाई है जिसमें खर्च की गई लागत के लिए इसका प्रबंधक उत्तरदायी होता है। लागत केन्द्र एक उत्तरदायित्व केन्द्र है जिसमें सामग्री के निवेश की मात्रा और मजदूरी घण्टे मौद्रिक मूल्य में मापे जाते हैं।

2) आय केन्द्र :- आय केन्द्र एक उत्तरदायी केन्द्र है जहाँ प्रबंधक केवल वित्तीय उत्पाद जो विक्रय द्वारा निर्मित होते हैं उसके लिए उत्तरदायी होते हैं। उत्पादन को उत्पादित वस्तुएँ और सेवाओं के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

3) लाभ केन्द्र :→

लाभ केन्द्र एक उत्तरदायित्व केन्द्र है जिसमें आगत को खर्च के रूप में और उत्पादन को आय के रूप में मापा जाता है। लाभ केंद्र का प्रबन्धक आय लागत एवं लाभ के लिए उत्तरदायी होता है।

4) विनियोग केन्द्र :→ विनियोग केन्द्र का प्रबंधक उस केन्द्र में उपयोग की गई संपत्ति का सही उपयोग के लिए उत्तरदायी होता है।

विनियोग केन्द्र के कार्य का निष्पादन उससे संबंधित विनियोग से लगाया जा सकता है दूसरे शब्दों में विनियोग केन्द्र के कार्य का निष्पादन संपत्ति आवर्त और विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय से लगाया जा सकता है

उत्तरदायित्व लेखांकन का महत्व →

उत्तरदायित्व लेखांकन पद्धति का प्रयोग प्रबंधकों के कार्य निष्पादन को नियन्त्रण करने के लिए उच्च प्रबंधकों द्वारा की जाती है उत्तरदायित्व लेखांकन का महत्व निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

1) निर्णयन का विकेन्द्रीकरण → यह पद्धति प्रबंध की संगठनात्मक ढांचे में प्रभावशाली भारार्पण से उत्तरदायित्व सौंपने में मदद करती है

2) कार्य निष्पादन की तुलना → प्रत्येक उत्तरदायित्व केन्द्र के वास्तविक कार्य निष्पादन की तुलना प्रमापित कार्य के साथ नियमित रूप से की जाती है

3) नियंत्रण की सर्वोत्तम पद्धति है

4) उत्तरदायित्व लेखांकन न केवल नियंत्रण करने में मदद करता है अपितु नियोजन एवं नियन्त्रण में भी सहायक है

5) कार्य निष्पादन में सुधार → विचलन ज्ञात करने से कार्य निष्पादन में सुधार होता है

6) बजटरी नियंत्रण प्रणाली को आसानी से लागू करने में उत्तरदायित्व लेखांकन सहायता करता है

7) इस प्रणाली के आधार पर नियंत्रण प्रक्रिया का परिचय कुशलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है

Marginal Costing

सीमांत लागत विधि एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो प्रबंध को कीमत निर्धारण, निर्णयन, लागत सूचनाओं के प्रस्तुतिकरण, लागत पर नियंत्रण एवं लाभ नियोजन आदि में मार्गदर्शन प्रदान करती है यह विधि कुल लागत को स्थायी एवं परिवर्तनशील लागतों में विभाजित करती है एवं इन व्ययों पर उत्पादन की मात्रा में होने वाली कमी या वृद्धि का अध्ययन करते हुए, संस्था के लाभ या हानि पर होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण करती है.

यह विधि लागत मात्रा तथा लाभों के मध्य संबंध स्थापित करती है मात्रा और लाभ के बीच प्रत्यक्ष सम्बंध होता है लेकिन मात्रा एवं लागत में विपरीत संबंध होता है।

I.C.M.A "सीमांत लागत शब्द का अर्थ उत्पादन की किसी निश्चित मात्रा के लिए उस राशि से है जिससे कुल लागत में परिवर्तन होता है, यदि उत्पादन की मात्रा एक इकाई से कम या अधिक हो जाए।"

एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से कुल परिव्यय में जो वृद्धि होती है उसे सीमांत परिव्यय कहते है।

सीमांत परिव्ययांकन एक ऐसी तकनीक है जिसके द्वारा उत्पादन की मात्रा में हुए परिवर्तन के कारण लागतों एवं लाभों के परिवर्तन को जाना जा सकता है सीमांत परिव्ययांकन को परिवर्तनशील लागत विधि भी कहते है।

सीमांत परिव्ययांकन की विशेषताएं :—

1) यह लागत के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण की एक तकनीक है जो प्रबंधकों को निर्णय लेने में सहायता करती है।
2) सीमांत लागतों को ही उत्पाद की लागत माना जाता है।
3) स्थायी लागतों को सामयिक लागत माना जाता है।
4) अर्द्धनिर्मित माल एवं निर्मित माल के स्टॉक का मूल्यांकन केवल सीमांत लागतों पर ही किया जाता है।
5) कीमतों का निर्धारण सीमांत लागत में अंशदान को जोड़कर किया जाता है।

अवशोषण लागत लेखांकन :⇒

अवशोषण लागत लेखांकन में उत्पाद पर होने वाली सम्पूर्ण लागतें उत्पादों से ही वसूल की जाती है इस पद्धति में स्थायी एवं

परिवर्तनशील लागतों में भेद नहीं किया जाता है और ये दोनों लागतें एक साथ ही चार्ज की जाती है

सीमांत लागत विधि के लाभ →

1) निर्णय में सहायक → प्रबंधकीय निर्णयन में सीमांत लागत विधि अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है निम्नलिखित कुछ क्षेत्र है जहाँ सीमांत लागत विधि के प्रयोग से समस्याएँ सुलझाई जा सकती है

1) विदेशी बाजार पर कब्जा करने के लिए वस्तु को किस निम्नतम मूल्य पर बेचा जा सकता है

2) लाभों का वांछनीय स्तर किस प्रकार बनाए रखा जा सकता है

3) विक्रय मूल्य कितना कम किया जा सकता है

4) व्यवसाय के मुख्य या सीमित घटक कौन-2 से है

2) लागत नियंत्रण → सीमांत लागतें परिवर्तनशील लागतें होती है और परिवर्तनशील लागतों को नियन्त्रित किया जा सकता है और स्थायी लागतों का नियंत्रण प्रबंध को सौंप दिया जाता है

3) लाभ नियोजन →

सम विच्छेद बिंदु लाभ मात्रा अनुपात, सुरक्षा सीमा, परिव्यय मात्रा लाभ विश्लेषण सभी सीमांत अंशदान प्राप्त करके लाभ नियोजन करते है

4) सरल → सीमांत लागत पद्धति सरल एवं समझने में आसान है

5) उपरिव्ययों के अल्प या अधिअवशोषण की समस्या का समाधान → क्योंकि इस पद्धति में स्थायी व्ययों को वस्तु की उत्पादन लागत में सम्मिलित नहीं किया जाता

6) पूरक → यह पद्धति प्रमाप लागत एवं बजटरी नियंत्रण पद्धतियों की पूरक मानी जाती है

7) प्रबंधकों को सूचनाएँ →

सीमांत लागत के द्वारा प्रबंधकों के संस्था की अत्यंत महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती है ये सूचनाएँ परिवर्तनशील लागतों तथा बिक्री के तथ्यों पर आधारित होती है

8) सीमांत लागत पद्धति स्टॉक के मूल्यांकन को सरल बनाती है क्योंकि स्टॉक का मूल्यांकन परिवर्तनशील लागतों पर आधारित होता है

Friends
Page No. Date

सीमांत लागत विधि की सीमाएँ →

1) यह पद्धति कई मान्यताओं पर आधारित है जोकि सभी परिस्थितियों में लागू नहीं होती

2) यह पद्धति सभी लागतों को स्थायी एवं परिवर्तनशील लागतों में बाटती है परन्तु कुछ लागतें अर्द्ध परिवर्तनशील प्रकृति की होती हैं

3) यह पद्धति परिवर्तनशील लागतों के अल्प या अधिक अवशोषण की समस्या को दूर नहीं करती है

4) सीमांत लागत पद्धति को ठेके अथवा जहाजरानी उद्योग में लागू नहीं किया जा सकता है

5) यह पद्धति समय कारक को पूर्णतया नजर-अंदाज करती है

Marginal Cost Equation

Sales = Fixed Cost + Variable Cost ± P/L

$S - V = F \pm P/L$
$S = V + P + F$
$S - V = C$
$C = P + F$

Friends
Page No. Date

अंशदान (Contribution) →

बिक्री एवं परिवर्तनशील लागत के अंतर को अंशदान कहते हैं

Contribution = Sales − Variable Cost (Marginal Cost)

Profit / Volume Ratio → अंशदान के विक्रय मूल्य से अनुपात को लाभ मात्रा अनुपात कहते हैं लाभ मात्रा अनुपात जितना अधिक होगा लाभ की राशि भी उतनी ही अधिक होगी। इस अनुपात के कम होने का आशय है लाभ की राशि में कमी आना।

i) $P/V \text{ Ratio} = \frac{C}{S} \times 10$

(ii) $\frac{S-V}{S} \times 100$

(iii) $\frac{FC + P}{S} \times 100$

(iv) $\frac{\text{Change in Profit or C}}{\text{Change in Sales}} \times 100$

V) $P/V \text{ Ratio} = \frac{\text{Profit}}{\text{Margin of Safety}} \times 100$

Page No. Date

Uses of P/V Ratio

i) $BEP (in ₹) = \frac{FC}{P/V\ Ratio}$

ii) Fixed Cost = Sales × P/V Ratio − Profit

iii) Variable Cost = Sales × (1 − P/V Ratio)

iv) $Sales = \frac{FC + DP}{P/V\ Ratio}$

v) Profit = Sales × P/V Ratio − Fixed Cost

vi) Profit = M/S × P/V Ratio

vii) P/V Ratio = 1 − Variable Cost Ratio

Break Even Point (सम विच्छेद बिन्दु)

बिक्री का वह बिन्दु जहाँ व्यवसाय को न तो लाभ होता है न ही हानि होती है सम विच्छेद बिन्दु कहलाता है अर्थात समविच्छेद बिंदु पर प्राप्त विक्रय राशि और उत्पादन की कुल लागत समान होती है समविच्छेद बिन्दु वह बिन्दु है जिससे अधिक बिक्री करने पर व्यवसाय को लाभ होता है और जिससे कम बिक्री करने पर हानि होती है समविच्छेद बिन्दु पर लाभ शून्य होता है अतः यहाँ अंशदान केवल स्थायी व्यय के बराबर ही होता है

बिक्री − परिवर्तनशील लागत = स्थायी व्यय।

समविच्छेद विश्लेषण की मान्यताएँ

1) परिवर्तनशील लागतें प्रति इकाई स्थिर रहती है
2) स्थायी लागतें स्थिर रहती है
3) सामान्य मूल्य स्तर एक समान रहता है
4) उत्पादन एवं विक्रय में उचित समन्वय है

समविच्छेद के लाभ →

1) इसकी सहायता से लागत में हुए परिवर्तन का अंशदान पर प्रभाव ज्ञात हो जाता है
2) विभिन्न उत्पादों की लाभदायकता का तुलनात्मक अध्ययन हो जाता है
3) मन्दी के समय मूल्यों को कम करने का अथवा हानि पर व्यवसाय चलाने का प्रभाव ज्ञात किया जा सकता है
4) सुस्त क्षमता का उपयोग किस समय तक किया जा सकता है, सम विच्छेद विश्लेषण निर्णय करने में सहायक होता है

समविच्छेद विश्लेषण की सीमाएँ :

1) स्थायी व्ययों में एक स्तर के बाद व्ययों दीर्घकाल में परिवर्तन अवश्य होता है।
2) विक्रय मूल्य में बढ़ोतरी व गिरावट आने की सम्भावना रहती है।
3) भिन्न-2 विक्रय मूल्यों पर तथा अनेक उत्पादों के निर्माण की दशा में उनका सामूहिक सम विच्छेद बिंदु उपयोगी नहीं होता है।

Break Even Chart

समविच्छेद बिंदु रेखाचित्र से उत्पादन विक्रय एवं लाभ संबंधी सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसकी सहायता से उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर होने वाले लाभ हानि के अतिरिक्त वह बिंदु भी दर्शाया जाता है जिस पर व्यवसाय को न तो कोई लाभ होता है न ही कोई हानि।

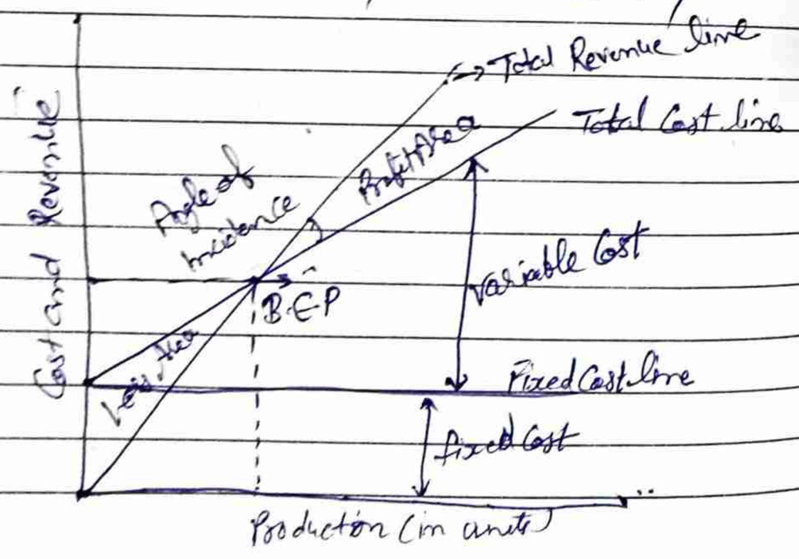

Profit – Volume Graph

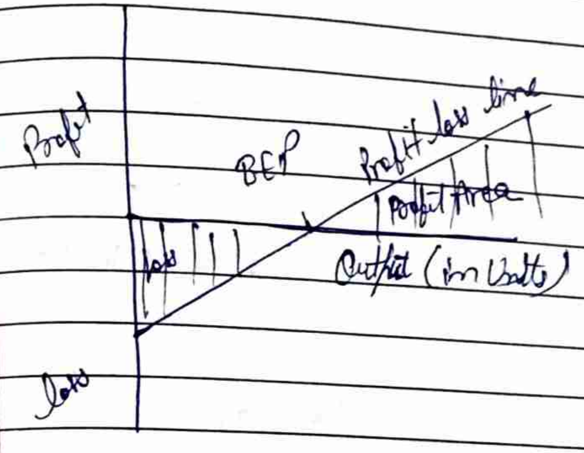

सम विच्छेद बिंदु ज्ञात करने के सूत्र

1) Break Even Point in Units

$$B.E.P = \frac{\text{Fixed Cost}}{\text{SP Per Unit} - \text{VC Per Unit}}$$

$$B.EP = \frac{FC}{C}$$

2) BEP in terms of money Value :

$$B.E.P (in ₹) = \frac{\text{Fixed Cost} \times \text{Sales}}{\text{Contribution}}$$

$$BEP = \frac{FC}{P/V \text{ Ratio}}$$

New B.E.P in Unit $= \frac{FC}{New\ SP - VC}$

$= \frac{FC}{New\ Contribution}$

New BEP in (₹) $= \frac{FC}{New\ P/V\ Ratio}$

a) Sales or Production at Desired Profit (DP)

in (Unit) $= \frac{FC + DP}{C}$

In (₹) $= \frac{FC + DP}{P/V\ Ratio}$

b) When desired profit per unit is given.

Sales in Units $= \frac{FC}{C\ Per\ Unit - P\ per\ Unit}$

Sales (in ₹) $= \frac{FC \times SP\ Per\ Unit}{C\ per\ Unit - P\ per\ Unit}$

सुरक्षा सीमा (Margin of Safety)

वास्तविक विक्रय राशि का समविच्छेद बिन्दु की विक्रय राशि पर आधिक्य सुरक्षा सीमा कहलाती है।

i) Margin of Safety (in Unit) = AS − S at B.E.P

ii) Margin of Safety (in ₹) = Actual Sales − Sales at BEP

iii) Margin of Safety $= \frac{P}{P/V\ Ratio} \times 100$

iv) Margin of Safety % $= \frac{Margin\ of\ Safety}{Actual\ Sales} \times 100$

सुरक्षा सीमा का महत्व → किसी व्यवसाय की सुरक्षा सीमा जितनी अधिक होगी, आर्थिक रूप से व्यापार उतना ही अधिक सुदृढ़ होगी सुरक्षा सीमा में निम्न उपायों द्वारा वृद्धि की जा सकती है।

1) विक्रय मूल्य में वृद्धि करना।
2) स्थायी एवं परिवर्तनशील लागतों में कमी करना।
3) विद्यमान उत्पादों के स्थान पर अधिक लाभदायक उत्पादों का उत्पादन करना।
4) यदि उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना संभव हो

तो उत्पादन में वृद्धि करना।

सीमांत लागत विधि के उपयोग ⇒

सीमांत लागत विधि एक ऐसा यन्त्र है जिसकी सहायता से प्रबन्धक निर्णयन, लागत नियन्त्रण व लाभ नियोजन से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेते हैं। कुछ महत्वपूर्ण प्रबन्धकीय समस्याएँ जिनमें सीमांत लागत विधि का उपयोग किया जाता है इस प्रकार हैं।

1) विदेशी बाजार हथियाना
2) लाभों का वांछनीय स्तर बनाए रखना
3) सीमाकारी तत्व
4) बनाओ या खरीदो निर्णय
5) अनुकूलतम उत्पाद या विक्रय मिश्रण का चुनाव
6) उत्पाद के वैकल्पिक साधनों का चुनाव
7) विक्रय मूल्य का निर्धारण
8) क्रिया का सर्वोत्तम स्तर
9) कार्य निष्पादन का मूल्यांकन
10) पूंजीगत निवेश निर्णय।

M